



॥७॥ जजाजमोजजतपतिईसा ॥ जाकाध

इसलियातसामानेनवीमहालवकादि

~~हापदकमलमसुमसु~~
हो॥ दुशसुमिनिनाक ~~निनाकि~~ ~~निनाकि~~

जोभाहः। विपकोलराममदरा

वामनहायेहीनामउवागः॥२॥ नम

हअउमनेहिवाहीवा॥ तातपुनपु

कलापुकाग॥१०॥ उछातसजगतको

ता॥ नहंकोईमातपितामुपश्रुता

॥११॥ ठठाथाकुपदममगादि॥ ज

यदोनेसुंधदेहिनादोहिकालाहो

ज॥१२॥ डडादमाहजमवेविदहा

॥नाथाजालवंधमामाग॥१३॥ छछाधु

कोकाहनाहपभाह॥ ममनमप्र

यमगहईवनवग्यानकीदेया॥१४॥

॥१५॥ मवलीमलमो॥१५॥

[illegible]



The image shows a single, aged page from a manuscript. The paper is a mottled yellow-brown color, showing significant signs of wear, including creases, tears, and large, dark stains. The text is written in a dark ink, but it is extremely faded and illegible due to the age and damage. The script appears to be a form of Indic or Persian script. On the left side, the binding of the book is visible, showing the edges of other pages and some text from the adjacent page. The overall appearance is that of a well-preserved but heavily weathered historical document.

राजाजने लुको ॥ गनन कटाजु व नाम पुकारो
प्रथम गनने लुको मारा ॥ १ ॥ मल्ल मल्लु निलिक
टके ॥ लुको टिका ॥ २ ॥ जो न रमाये गोवर्धन
जो ॥ ३ ॥ किना मल्लुको ॥ १ ॥ किटि व को
हो मल्लु विसाजे निरपट गंगा विसाजे
मल्लुको ॥ ये कटि प्रकाश कर के निरु
व न को देखाये ॥ २ ॥ जो न टिका ने अम
तिगाये ॥ जो न टिका मल्लु राये ॥ विद्युत रा
ज को मल्लु गलगाये ॥ निधी वृक्षी वट
को गमन कर ॥ ३ ॥ जिन नाम ॥ ३ ॥

राजगु जेहि॥ सित कमलाः कु य मई ५ ल हे ही त कु ५ ल हे॥
क ति तिल त व न माल गु ये १॥॥ दिन म वि मई
लः मई उडिल लो दि ना कुं र ५ ल हे॥ मु रि ज न
मं न स हं स गु ये ज्यो ॥३॥ का लिय वि ष य
जो ज न दि ~~म~~ व न र ५ ल हे॥ पु कु ल न दि न दि न
लः गु घे र ॥३॥ अ म ल म न र च ट लो य न हे भ वा म
य न हे सी भु व न भु वा नो न वि चा न गु ये
४॥ ज न कु हु ता क्ति त भु व न हे दि त भु व न हे॥ म म
र ल म्नि क न म क थ गु य ॥५॥ अ भि न व गु ली य
~~र ल म्नि क न म क थ गु य ॥५॥ अ भि न व गु ली य~~
॥६॥ त व य ल ने ह ति ता व न हे से ति भा व न हे॥ कु
र कु म ली न न ते भु य ॥७॥ अ ज नो क वे ति
हे कु र त भु य हे॥ म ज ल म जे लु डि त न म

राग विष्णुपाद ॥ बुधवाटीमिमाभमिमाकोलाः फ-५
नतिप्रकरोहेमाताहिमा^{लाल} ॥१॥ वादिलाशदम
ठः^{बुधवा}मिदिदिमिदिमा ॥ नायेलाशद^{धुम}म
किधुमदिमा ॥२॥ अस्तमिगल^{लाल}नाग
दलिला ॥ भमलजलोदियामिन^{लाल}वयालिला
॥३॥ भनयेविष्णुपादमिदिमा^{लाल}दयाक
गतपतितायाव^{लाल}दिलाबुधवाटमिमावति
यावोला ॥४॥ २७

राग गौरीया ॥ कदुलपुवतमिपतिटमिचट
न ॥ मिपेलीषकन^{लाल}दिलःधुधुमिमिलक
धुम ॥ भममःदुलानमगलःमगमिपेल ॥ मो
ललललललनः^{लाल}भमलन^{लाल}दुल ॥२॥ गलान
नकु ॥ यदु^{लाल}कलादललो ॥ गंगामालमन
वसपाः^{लाल}दुलानमोलन^{लाल}दुल ॥३॥ मिचीन
दमिह^{लाल}मिमिःमलुपतिनेका ॥ गौरीयादि
नमिदि^{लाल}विधन^{लाल}विषकदुल ॥४॥ २८

रागमाईको॥ मारु गुडै कालिनिः कैं कालि कालि
मातोडे जडा धामा॥ रूप तेहि अतिनिः छ नाये
मनायेनिः त्रिभुवन पापतिरा नि लीला लउवा
रतिः कीकाली काली मारु तोहो जडा धामा ॥१॥ शुभ
राग आमुगति ॥ न त्वेन य सो निव
दिनाराथः सोम सोम मरुदिनि
मरु मरु गातनेः न वृगह तोह सो
तिकलडे न नाथः ॥ सोम सोम मरुदिनि
उम मरु गातने तेग सोम मरुदिनि कलविनि
नाथ ॥ शुभ तोह मरुदिने वे ते मरुदिनि
तिकलडे व व कोय कीरु मात ॥
शुभ लु क लाल शुभ मरु हलके
व लनै ह वै मा मो मुपः राग ज मरु
वै के गुड हा लने आमु व हलके
ग हल जने ॥२॥

सिंह सताक सभ ह ८ मै गला । विंग ला
मडा का मो क ह ८ म डरे का लि ॥
महि तो जो जीने स प व व ह ले ॥
शिव मंती का क ह्या न का क स का म्हा तो हे
तै की का य ह ए थ ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

एग ॥ ॥ श्री ॥ श्री कृ नाम ये स न तु मारेः श्री
कृ नाम ये अ हारेः ॥ अरुनी वरुनी पुती सुन्दर
मुरती कोरी मुरजस बानीः ॥ हरि हर वंसा इन को
हस रूप धरे भगवान श्री कृ ॥ ४ ॥ नीनी नोद प्रती
पालन भोव जोगीनी साधीः ॥ जाये स मूदा वेद
उधारन प्रकत मदी दुः नाथः श्री ॥ २ ॥ कलु कनी
गारनी स कस्त वारी भक्तन को हित कारी ॥ नोद
नाथ प्रभु नो पुन गाये सेवक ग्यात उधारनी ॥ ३ ॥

रागः ॥ ५॥ आनन्दे ॥ ५॥ आनन्दे ॥ ५॥ आनन्दे ॥ ५॥
नरकोपी जाला सुखी माई देवी मादी भुवानीः ॥ ५॥
सुखी माई देवी आनन्देः ॥ ५॥

राग ध्रुव ॥ ५॥ ओरि सगजपति अरुज करण करि म्यो
डरवी घन रीता गोरीः ॥ येकर वन गज वन रीत धर
मुक्ती मुक्ती दयारा मती कर गुरु गज सवी नाथ कर रीत
डरवी घन रीता ॥ ५॥

राग ध्रुव

राग

जीती ते नाठ भजो मन लोके जीती ते नाथ भजो मन लोके भुवन धामाई गीरी
जासो हे ससी धरा ससी धरा सो जीत सो ॥ १॥ जीती ते नाठ भजो मन लोके
॥ १॥ गीरी सो ते नाथ ॥ आदो राम ते वन दीप वन ह्यसी गाव नचन गताना
जमान कोती सती रती हती हती हती भातु

जीती ते नाठ भजो मन लोके शास्त्रा ॥ ५॥

स्वास्ति

श्री

दे

हेराम अताच डोभने मुलाति वीदुलो

॥ के का पुलो प्र मु क को फुला ॥

सिवला मपे मु अ भा गिनि के का पु

जाला ॥ अछेला चडा उ भ ने मुला

विदुला ॥ के ॥ १ ॥ जाहि च डा उ भ ने

मछेरि विदुला ॥ के ॥ २ ॥ चन चडा

उ भ ने म म ए विदुला ॥ के ॥ ३ ॥

फुल दिच डा उ भ न म म म

विदुला ॥ के ॥ ४ ॥

५१५

१ धरापसभा जुन सुने कागज गाय उदा पनी कारनी लेखन समाप्त
ने जो दाया वाभा जुने हात

मसुह म हार म हार । क म

卷之四

卷之四

A close-up of a piece of aged, yellowed paper with faint, illegible markings. The paper has a textured, slightly mottled appearance with some darker spots and a horizontal crease. The markings are dark and blurry, possibly remnants of text or a stamp, but they are not legible.



Handwritten text in a script, likely Devanagari, on aged, stained, and torn paper. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines, though many characters are faded and difficult to decipher. The paper shows significant signs of wear, including discoloration, water stains, and physical damage to the edges.

श्री गणेशाय नमः ॥ पवन मन्दः सु
मधु मीतल हे ममीदि सोमि
श्री नै कत गी गाव हत नै सोमल
श्री वादि नाथ वि सोम ॥ १ ॥
न्ये स सुमि नै कत नै सुदि
धन धानि महे सो वि इ वृत्ता
पधन अ सुमिः श्री वादि नाथ वि
श्वम ॥ २ ॥ मगानि गतु मग
न स ए नो ए सु नि कत नै जो
धानि अ पा ल ले ला श्री वादि नाथ
वि सोम ॥ ३ ॥ इ इ च इ इ क वे
धुनि कत धु मदि पप्र का नि
धुनि जन् कत ज ये ज ये

कका कृष्ण भेडा लजिलारा तब हुत नव सागर
पारा परमगति परजम सुधा स चीत मील हर
नम मी पारा ॥ १ ॥ खरवा खतर स पीतु म भाई
मुकी मील हर जपी सारी खोती कमन कीजे
जाई खतर स मील हर गुन गाई ॥ २ ॥ गगा
जान गुन उ पदे सा हरी नाम की पाप के ही सा ॥
गोबर धन जीरी धत पर देखा रती नर दे नर पा
प के ही सा ॥ ३ ॥ चचा धत धत देखा भी है
बी राज कर पर मात म आ है धत धन स्या म
की नाम म मा है म की व-धन उतर जाई ॥ ४ ॥
हुं हुं हुं हुं हुं हुं व के आ सा है के कता तो जय म क
का सा जाने कुं कुं व अर भारा कोत कोती बन हा
मातरा सा ॥ ५ ॥ चचा चंचल चेतन की जो चा है
वे दुस मा धत हा जे चो ध्य साव प धी र स पीतु
न ऊ मरा पुन रहरी मीले ॥ ६ ॥ चचा धत
पीतु की ल यी ध धो है हरि के वर स द

सुख सोई ॥ ३॥ जगजग सुखारोकाया करीव्य
तमै हरि के माया ॥ ८ ॥ नृना नृ लोखे हरि के
साया धी धी दीन दीन कुतेजे मकी कन्या ह
री रस भीमृत का बारी अथा या मति धा द
गुरु के संग ॥ ९ ॥ अथा भं पद सचानो ची
मील धुत में हरि के वानी एक हरि दुत भो
दुन धा मुकी मील हरि वल वधानी ॥ ५० ॥
ट टाते कसु न हरि माया सुख कह दे मा दत
काया नर हरि नाम भजी समी सा रा गती मा
ले भगवाने का माया ॥ ५५ ॥ ठ ठा ठा कर हरि
का धारे भजले दुनिया नाम न धारे दीन दीन ग्या
न गती गुन जाई भकी अभकी कुनी जे मधुर
॥ ५२ ॥

॥ १५५ ॥ ~~॥ १५५ ॥~~

रागादिभावात् ॥ नासंघेनतुः गुणानि
 दत्तनविष्णुका ॥ गित्तमना गद्याकनिः
 कृतमपुनः ॥ १५५ ॥ कपनि ॥ गलसको
 मातेतया तुलविष्णुमातप्राशुतः गुण
 ॥ १५५ ॥ किंकिदिष्टा मोताउनः आतिनः लंघ
 टव्याल ॥ १५५ ॥ नवनयकजोस्यः खननलं
 ददुस्यः गुण ॥ १५५ ॥ कसिद्याविनतिथः
 दद्याः ॥ १५५ ॥ दनावयाददत्तन
 विवृजितनारांघेनतुः गुण ॥ १५५ ॥ नेपाल
 घनपतिः श्रीतयेभासुषमलजुल ॥ १५५ ॥
 श्रीराजकलायः फयेकावनाकोरा
 गुगुणादिदत्तनविष्णुका ॥ १५५ ॥

रागविह निविह्य मति ॥ मीडिलमै जदुरा ॥ सुभया लुं
गाविहः आरुः सुत के हज वा ला इ ॥ हा ये २ उं ओ
कवध गइल मोति थारि ॥ १॥ मोन ल मे हज गारि कु
ल फुले वारि वारि ॥ बहु विधी ते पुकारि ॥ हा ये २ उं ओ
लान लि सुटति डिपे का कुल साल लोकि ॥ २॥ वि कल म
पेल वालाः नहि दे मोन दुला ला ॥ काहा ते काहे पुला ला ॥
हा ये २ उं ओ वुज मी न दित का कुल विह रुकि ॥ ३॥
तमि सव स गः सा थाः चल ले हो ज सु ना जोति ट
॥ कुजि या ना ट वारि हा ये २ उं ओ मे टिले मि ज म
सप्रे हि आरु ॥ ४॥ रुहि मो टो जि जे ले कु वरि सु
दिति मे ले ॥ हा ये २ उं ओः कु वरि सा प्रिती मे ले को
ने आ ग रे कि ॥ ५॥ न आ फु आरु नहि न आ ये न
मे जि सा ट पाति ॥ कट म मि उ थ द्यति हा ये २
उं वा व गिया हो ने न थ कर कि ॥ ६॥ म न थ वि ध
हा प्र तिः सु न ह प्रि ज रु थ रि ॥ हा ये २ उं ओ पु व
नो ह मा क ल प व ल कि ॥ ७॥ १२

राग
जसा
व्या
ज
व
क
द
म
॥
ति
क
॥

१५
१५ ग निभा स सकल ॥ श्री जू ज पे का लि
१६ समाता गी धा के ॥ सु ग दा न ला विष्णु का गि वि
१७ ध्या र्ते ना प ला क ॥ मालि गरी मू डे व वि व
१८ ल गी धा के ॥ १॥ ५ नु मो ति नि टा थै क प
१९ व त नि धै का क ॥ ६ मन कि छु मु री न ला
२० द गी धा के ॥ २॥ न लो क ज्ञान या क पा प
२१ द को फू क ॥ ३॥ के थ वि व प लो क गी धा के
२२ ॥ ३॥ त न मन ज्ञान या क म का चो त मन न
२३ ॥ मन वा द धु रै या ना वि व ग धा के ॥ ४॥ म
२४ ति ल को ति दे व लो क दे व ध्या र्ते ना प ला
२५ क ॥ श्री का लि गी राः न्हा प ला क श्री ग धा के
२६ ॥ ५॥ मू

राजवर्षन राम

तिमाजु ॥ नमस्तु कालयाचे जिने स एतौ
 तिमाजु ॥ नमनाथे तिं कल आ वः न
 तये का हवित्र ते रामद्वि ॥ १॥
 पुनसपुतुपुसे मितालजिनु या ॥
 पुनया वे लाजुल नि ताल जे या राम
 ॥ २ ॥ कालवस ग्यानिजि मनु या मि लल जि
 पुया ॥ नोटवा टल लया मे ग्याने मिमजु या
 ते रामद्वि ॥ ३ ॥ अिनवने अिन जि को
 ने पासा मा ल नि वने ॥ अलि नि पासा
 मुजा आ वल नि से ते ते रामद्वि ॥ ४ ॥
 मोल व ने तो हल दिना पासा मा
 नि वने ॥ मोसा था म ५ ॥ २ ॥

राग जै रवि ॥ पि यावन कि वे रि धा दर जना थारि रहें ॥

सब द पि धा रें वे रि मि ला वी रे ॥ नि सरि जात न्यो रे जि
या हो ॥ दर जना ॥ ५ ॥ दो हा नो मे य स जाना कि पि
ति कि यो जानि मोहि नगर थि चुर पि मि पि ति कि ये दुष
होई ॥ २ ॥ आहु कर जग ज रे जंजु ल कुज रि जा री जि
हा रा पा पि ना ज रे कि या हि त मई ॥ ३ ॥ विरू वा न
याना हा य हा य दिन र य हा के यह सर ला गि नि स
दि न न ये न ॥ ४ ॥ विर हू मा र के जा ल मो अब
पि या तु ला र्छ आ नन कै ते मे रा दि ल ला जा न ग य
॥ ५ ॥

राग रागा ॥ पुजान न ले रा वा प्या दे वि पु जान न
ले रा वा ॥ अ दाना नंदन वे ल कि पा ति रा से रा
स गु मा र्छ ॥ ५ ॥ मुजा

राग निरगुन ॥ ॥ मो तु को थ कु ती ल क ल ग म गी ॥ तु म
स ग क धा क हुं हे क क ता म य ॥ तु हो अं क र ज म गी ॥ मा
सु ॥ १ ॥ म री भरि व ड वी से क र डो ल त ॥ जे री लं क ग म
मी ॥ २ ॥ जा हा स त स ग त ता हा अ ती आ ल स ॥ बी य
स स मे वी स रा मी ॥ ३ ॥ श्री पती च र न हो र भौ
सर को ॥ जे सै नु न ह रा मी ॥ ४ ॥ जो री न त न ता को बी स
रा य न ॥ नो सु दी न क र त जे ला मी ॥ ५ ॥ हु म ती म द म
हा मी पा व र ॥ स व पती त न को ह रा मी ॥ ६ ॥ कु जा की
जे प्र नु दा स तु ल सी पर ॥ तु म हो श्री पती ला मी ॥ ७ ॥

राग क धा दी ॥ ॥ ही थी पी या तु म तो वा त न मान्ये कहो
म नो थरी स व त सै ॥ ज न क दू ला डी रु गी क मारी आ व न था री तु
न क पुरी सै ॥ ध न का जा र ता रे र द न न द नः भा गी ज
य ल पी या ठी री दू र सै ॥ १ ॥ वा ली के गो द र ह धा मा
सा म गी ही दे ता लु ये मु नी के ॥ धा र चो रा व गा ल व न गी
आ गी ली गी बी या आ ही त न मी ॥ २ ॥ उ च म ह ल य धी वि
थे माले डू म न ड र ला गी हुं हु न रे धि के ॥ तु ल सि रा स प्र नु
आ सा र धुं व र के ना डी त वे पी या र धु व र सै ॥ ३ ॥

राग नारक ॥ ॥ भावना मेरे ॥ नैना के गर मने भा
वना ॥ नाथ मुलाना गल गिर ही जजनी जजकार जु न
नी ॥ भावना मेरे नेना के सर मा मे भावना ॥ मेरे मूर चन्द
पारे चारे को मल म दारी ज सो वी ये गि सो अनर सर ॥
१॥ भावना मेरे नेना दुनी यामनी मेरे को विनती यतना मे
मानन ही मेरे दीन नही भावना मेरे नेना ॥ २॥

रागः नापि कंछानि समाधा ले दारि
जा नै म यो नित ॥ उधा आ उ पा उ ला
गि वनि जा उ मे व माः गो कु ल्य को हा
ल व व व ता इन्द्रो उन क्य कान ॥ १॥
साध मय गो विने सवे इज मा च यो
उधा जे लो वे ठि जि का ह गो पि नि ल
ह ॥ इ यो मा पि ॥ २॥ क क ॥ जि का जा म
प क ॥ जि सु नामें बु डें ह क ॥ वाल म
सु सु ह गो पि मे रु ल रु ल रु रु रु

॥ ३॥ नडिक्का निडिक्का मडिक्का
 वायोनि ॥ थाकु राज ले गला मे
 सावित्र हा मणि का पोनि ॥ ४॥ मथुग
 को गी गुज मुना पाये पानि दिउ लोके
 विजो हिस उता हा लनु मता का को डि
 उंला ॥ ५॥ गो कुल को अकनु मन्ना
 उता जा लो के नि ॥ हा मि ह नु को य
 तो ह नु मन फा ल दिनु म पोनि ॥
 ६॥ पाणि क छाने र मा पा ले हा डि जान
 म पोनि

राग धुरी ॥ ॥ राम प्रिया हरि पू सलो गो राग
 ॥ सति राम को हर सनक लो ॥ मा म नद सर यजी
 के तो ना ॥ १ ॥ मो र म को धितां मे सो है ॥ चो
 ल उन मे कु छु मा ड ता ना ॥ २ ॥ तुलसीदा लो म
 आस चर न्वो ॥ हरिको चरन मे धा न ल गा
 व ॥ ३ ॥

राग भजन ॥ ॥ नैना वा के हेरतना नैना वा के हेरतना
राजा दुजे की सुनो मुनीजी यह दुनु बाल बका को
॥ कोन राग रकी जमलायो है काये नाम पीता के हे
रतना ॥ ५ ॥ रवी ससी कोती वरु के सोभा
स्या म गोरत मजा के ॥ राम लक्ष्मी का ह्मा उप
न की दुसर धना मपीता के हेरतना ॥ २ ॥ मु
नी को ये जो दुरन्करी के गृह हुआ ये राजा वरुजी
न की ममता हरि राम से कात जो साथ सी या के
हेरतना ॥ ३ ॥ सब सखी सीता के वरमा म
पुजा चले म्मे मा गये ॥ तुलसीदास पुज आव
नी हेली बिलिखी के दृष्टना के हेरतना ॥ ४ ॥

रागविदहिनि ॥ समतिमनावनुगलमहि
नटेः कोमलमिताजो नारायणवनजालटे
॥ मिताशमलहिमैरुवनवासजालटे ॥ ५८ ॥
एथपुत्रेसोकप्रानायागयातटेः सम ॥ ५९ ॥
कौतिल्यामाहारादिमुष्णजुलारे ॥ भ
एथतनुदघनअतिदुषमिलटेः सम ॥ ६० ॥
राहुनेसरवनमिताहटेयातटे ॥ अत्यो क
वैजेयासःमितातयातटेः सम ॥ ६१ ॥ हुउम
नदलजो नारायणवनजालटे ॥ राहुनेसर
वैरुत्यानाःमिताजो नालटेः सम ॥ ६२ ॥ सम
भशुवनिघानथुतिविमियातटे ॥ ६३ ॥ दयाउ
येमालप्राशुकहनाक्रियानटेः सम ॥ ६४ ॥ म

॥ गजभीरुदरणी ॥ ॥ मटे प्राकृष्टि का रण जो जीनियामे करे ॥ चो

ममदुधोसंसार वसमानिदुतरः जन्मयागुपासके रिगपेनु व

उमारे मरे ॥ १ ॥ ॥ चनेसंकादि को न माया संजो नरे ॥ जो नो

वया चोसहि वाना कले मानिरे ॥ २ ॥ ॥ दूनुभाबु सिन्नु मधुवा

रंवारजुलारे : मोय मधुधो संसारे वने जी का रनरे

मटे प्रादि का रण जो जीनियामे करे ॥ ३ ॥

॥ ॥ परमनदईला रते सविस्वाम गुहा फर स एरुल

॥ ॥ कळ मणि माया कोय वसपु से दिल लः ॥ १ ॥

स पिद्ध वना वलो या वये मधुलाः ॥ २ ॥ ॥ जन तो ये म नमा

तुला ला के मो न लाः ॥ मधुला स वना वलो या वये मधु

ला ॥ ३ ॥ ॥ मो ये ज वा न व सु या पुर ज जा सि व लाः ॥ ४ ॥

व त के ना व क स स्या त मधुलाः ॥ ५ ॥ ॥ ला क स अ ना ठ व

का व न ग ठे म सिलः ॥ जी त थ ठे वा ना ठ के व र म सा ले

पु ला ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

२। ग। वं मलाः ॥ १॥ ॥ श्रीमान्मांसी दी स विट्टी हा सी अ
वी स्मांसी ना टी ॥ सो हा गे ए सा मा गी वने श्री क धरे ए ना
ना टी ॥ ना गी (अं न भा व) मा (उरा म द म ग्री सी सा) ॥ १ ॥
ना टी (म द न ले म दे मा दे श्री पुरा टी मा रा) श्री गी ले रा म ग वा रा
२॥ टी (ध्वं चा ग) टी ॥ २ ॥ ना गी (मं चा वी वं वा म लो
रा व न रा) (मं र न ह लो) म म वी व पु पु मी व व लो ना टी (ध्वं चा
ग) टी ॥ ३ ॥

राग भैरवि ॥ हेम सि स्या मनु या द ट स न ड ई ला
॥ क ड म सि मा या को स व सः पु स्य डिल ला म ड म
वि छ व ना व सो या व ये म दु लाः हे स ॥ १ ॥ ग न
लो ये ग न मालेः सु ला ज क चो न ला ॥ म थ रा ल
वि स्या ना व सु ला ज क चो न लाः हे स वि ॥ २ ॥ सो ये
जा ना ल स ला या पु र वा त मि ल ला ॥ वि भु व
न के ना व सु ला ज क चो न लाः हे स ॥ ३ ॥
ला क णि आ थ ध का व न ग ये म मि ल ला ॥ वि
थ ये वा ना त थ ध ट म लो व लाः हे स ॥ ४ ॥

[illegible]

रागभजतः १ वीं छन्द देवि वीं शुभ भगता आनमय यथा रनी ॥ क
रष परची सुल दम रुमुह मा लो भीर्ज विष्णु ॥ १ ॥ अ
म सान वासिनिः अघोर रुय चारनि ॥ अपा लना मभज
मध्यम चन्दे तु मदाहिनी पिक ॥ २ ॥ आफै असुर आफै
षर्ज आफै सी तारनि ॥ आफै सि व आफै सक्ति तितलो
कव्या पितै वीधु ॥ ३ ॥ तु मही जोग तु मही जोग तु म
हि मार निरंजने ॥ भगत् न पद गावे को ती या य
नासी नी वीधु ॥ ३ ॥

रागभजतः ॥ हरे कि सी सो दो ल जा ना ॥ कमा तु मारा
काम है ॥ १ ॥ ॥ ॥ चक तो आफने पै साव

कोलः रे

राग कछाटे ॥ मिथे मुखराम नाम ~~नाम~~ नाम
हि मिथे ॥ राम को नाम कह ना नितां राम को
भजना ॥ नो हित कह ना कह नाटे पी हि मिथे
मुख ॥ १ ॥ लख मेरि अंग नाः पट पट गिट
अंग ना ॥ साधु न रहे जग मे तो छु ति ग या
नी तारा पी हि मिथे मुखराम नाम कह नाः

ॐ नमो भगवते ॥ कहलगा यथातिशयः प्रभ
मेति ॥ ५८ पाते । चहुमासन मुमुकेः क
हुँडलचहुँचेरी ॥ पाच पाँद व मुषन
हिवोलेः अवसलना गतनेति ॥ १॥ प्रभुमे
जहुकुलहोरी अहुँलनाह जानु ॥ काहंग
यो कहि मये लेति ॥ २॥ गोवत धन धाँगे
पाच धाये जल धव लेँ चोति ॥ ३॥ रुकु
माने के मीग पास येलेः मुषपंचल पतले
ति ॥ मुहल व मुकुत माहि ५८ लकोः अँचल
लाजि मेति प्रभुमेति ॥ ४॥

राग ॥ राग ॥ बेलत के के मा में विद्रा ए व
 न जाइ हो मधु वन जाइ हो ॥ मोर म कु
 ता के हि ए कल किकान मे कु डल मो ॥
 ल टा के क म तु दी अ बना के गल मे डा है
 मल वे ई जै त माला विराजे ॥ ऐ में व न
 टु ज क म ल ने ग ड टि ॥ १ ॥ आस सुध
 ने व ड टा ए व मेः म पु ट मु ट ल वे न व जा
 मेः मोहि न व ड मे व्या क ल हो इ के ॥ ए
 न बेलत को जाइ हो त वि सक ॥ २ ॥ ए
 धा न वि सक ल सु ~~वे~~ वे लेः वेँ जा टि म टि
 डं गः ई फु वा जेः ग गत मे ड ल मेँ फु ल
 व ट साई ॥ अई लेँ धुं म म चाई च्या म
 न ॥ ३ ॥ ए धा न वि सक व म ग न म यो
 हिः फु ल व ट न मु न मेँ ग ल गा योः व न

मा. से के फुल चचा इ॥ भगति पु. कुरु
सैं प्रजन करि के: च. प. प. कि. त. ग. प.
हो स. स. स. व. ॥ ४ ॥ प्र. स. वि. छ. ना. ॥ ५ ॥ प्र. नि.
स. व. स. ॥ ६ ॥ डि. ग. रो. स. ॥ जि. डि. न. ॥ न. को. ध्या.
न. ध. ॥ तो. हैं. ॥ भ. ग. ति. ड. न. को. वा. ॥ का. वे. हैं.
वि. ना. भ. ग. ति. से. ॥ पा. व. न. हि. हा. ॥ को. ॥ ५ ॥

रगनीगुन ॥ ॥ मी. दि. ल. मे. ज. ग. नि. ॥ ठ. ह. रो. व. न.
ब. ड. सु. व. ड. र. र. स. न. पा. ॥ ॥ ॥ ॥ गी. रि. वा. ॥ ॥ ॥ ॥
ति. मा. ला. प. हो. रो. न. स. ॥ के. मा. न. ला. के. ठ. ध. रे. ॥ १ ॥
आ. ग. र. म. व. ड. पी. ॥ के. न. न. न. ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
र. ग. ये. ॥ २ ॥

गाला लीनु



एगमारागि ॥ जलिवं उंकार हलीव उंकार हलिवलिव
 उंकार ब्रह्मा विष्णु मया सिव ओं ए वं गे गौ ए वं ॥ १ ॥ येकाग
 न चतु एतन पं चानन एवे ॥ हंसा सनगा हं चालन ॥ २ ॥
 वृष बाह त साजे ॥ ३ ॥ डो उज चो चतु एतुज अलतुज डल
 उज तुमलो हे ॥ जग उतर्ता जग भर्ता जग धारन न क एता ॥ ४ ॥
 अक्षे माया वन ताया हृद मा हनी चोरे सीव ॥ ची पु ए हे मु ए
 हे कु ए मला चोरे ॥ ५ ॥ पीता व चीता म्वट वाग म्वट चोरे ॥
 तिनि हृ पाणि ए वत नी भुवन जग दी सो ह ॥ ६ ॥ क ए म ये कट
 मं ए ड व च क नी भु ट चोता ॥ मत का डी क प्र भु आ डि क भुत
 उग ली ग ॥ ७ ॥ चौ स ठि जे गिनि मंगल गा वे कि थ भै ह ॥ बाज
 त ता व म् पुं ग ओ ए वा जे ड म् व ॥ ८ ॥ कालि मै वी सो ना ठी वी
 जे न क वि ल चोरे ॥ नी ते उ के भो ग ए ग गा ये म हि मा अ ति मा
 ॥ ९ ॥ ली व जो के आ ति जो को ही गा वे ने लु डी न तु
 चो रे ॥ प ए डी न से वा न न द स्वा मि इ द्या फल पा वे ॥ १० ॥

अंता की ला पा तो जयी मा



राज ॥ हरे (की मी मी दी ल) ~~मामा~~ मा (14)
महे ॥ ये मान पे मा दो ये तो १८ दिने आप
मा म मा ॥

राज ॥ हरे की सि दी ल जाना बागु मा रा मा म
हे ॥ ये क तो पे सा आ क न्य घर ने दो क रा बद ना
ना महे ॥ १॥ जो करे कृ को र को स न न
ये द को न तु रा रहे ॥ जो करे दी कां प
न मे न न ना दा न रहे ॥ २॥

राज ॥ ॥ हरे कि सि सो दि ल जाना कया तु ना रा का
महे ॥ ये क तो पे सा आ क न्य घर ने दो क रा बद ना
ना महे ॥ ३॥ ये तान पे सा दि ये तो नरे दि आप्र मा
महे जो करे सा न कृ किर को स न रे न तु रा र
हे ॥ जो करे ही द का कृ न मे न रे न ना दा न रहे ॥ ४॥

सज निजति ॥ १ ॥ वनमे जात कि राघव को बैरि ॥ मा
 रि चला ये लं कारावन को वचन ॥ क चन सु ग हो के र
 म को दू ल न कुं ॥ ५ ॥ काहे स नो धरि वा ते सि ट को सरन
 जन ॥ कु धु वि हो रि प्र भु राम के सरन कि ॥ २ ॥ केहि
 मनो धारि मेरि सप ना कि वात सुनि य ॥ हनु नु मल वि
 र आ दलं काज लायो ॥ ३ ॥ कहि स नो धारि मेरि
 ई न्द्र जि पा स वा धे ॥ गर ज ते कुं भ क र्म के च न ग ट कि
 ॥ ४ ॥ रा म भक्ति नि वि भ न क स नो धरि रा ये पा ई ॥ च
 लो दान व वि र म रि म्र गु द्या ग म न कि ये ॥ ५ ॥ जो ग
 र म गु न न व सो गर ते र नु ॥ हरि के च र न गु न ५ ज न
 वा ल दु ता ५ ॥ ६ ॥ सु भ — मु — स
 रा ग का रि क ॥ ॥ को रि छे हो ला ज द फू वा जे ताल र
 न न न न न न न न न ॥ सा वि रि ते ल फू ले पा र ज ज पा
 रे भ स रा गु ज मान भ न न न न न न ॥ नि न्द सि क्त व
 र म र म र वे र रा ग ज हा सि छु द्य म न्द थ न क न
 न को रि ॥ ५ ॥ सु — भ — म

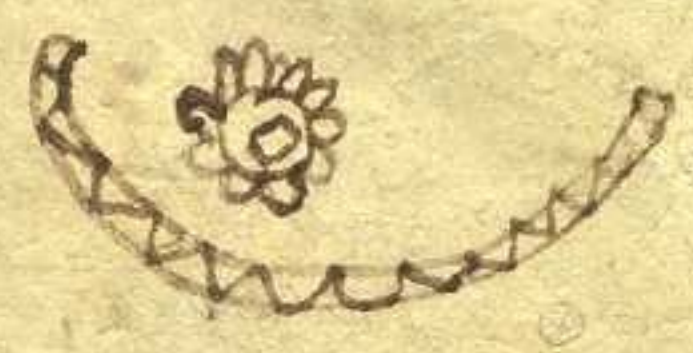
सुखी श्री सुखी चला ता ग का ई सुकल गु रा

आरती गी रामा पन जीकी औरती कली ताल नीत सी य पीकी
 भारती की रामा मन जीकी २ गावत प्रह्ला दीन पुनी नारद"वाल
 पीक वीज्ञान बीसारद ॥ मुक्त मन भादी सेदा अल सारद ॥ वरनी
 पवन पुत औरती नीकी ॥ १॥ गावत सं-तत सं-तत नवारी ॥
 और धत सव पुनीवर नारी ॥ वास आज की पुग वरवारी ॥
 नाक मुसंडी अगल द के दीकी ॥ २॥ गावत वेद पुरान अस्त
 दस"दयो साक्षा सव अ-हन कोर स ॥ पुनीज्ञान धन संतत नको
 सारस"सार अस संता संव दीकी ॥ ३॥ कली पुल हरी नीकी
 सपरस फीकी ॥ पुवंग सीगा चली युवती की ॥ हरनी रोग
 नव पुही अमीकी तो तामात सव बीपी पुल सीकी ॥ ४॥

एग घासु ॥ ॥ पीरति या पुरुष न वाना
 का हा हा हा हा हा हा हा हा हा हा ॥ ॥ मनु मनु मनु
 मुजी न सह या ये मनुजी न ॥ पा हा हा या पुरु
 धन का हा हा हा हा ॥ ॥ व्या न अति पावना
 कुला सो न ला ये मजा का वासु हा पा सहा ने ने
 न म गा के ॥ २ ॥ व्या न उ न च इ ता ठ मी वा प
 ल हा हा न न ॥ हा मु मु धलाति न भाति ना न ॥ ३
 ॥ जमु ना या नी हा ली मे व म दु ५ मु हा ली पी ट नी
 नि हा हा हा मु हा हा हा हा ॥ ४ ॥ हा हा मु मु नि मु व
 हा हा हा हा हा हा ॥ ५ ॥ व ने म ५ दु हा व ठे नी मु व
 ॥ ५ ॥

चन्द्रशा

Handwritten signature or scribble.



राज ॥ ॥ नागीति को व न नाग उ स को प्यारि ना कना
प्यारि ना कना ता जो नीभारि ना कना गा वे मि ये ता न से
सुदरवार कहता ॥ ॥ ॥ ये वात दारि के नो प्र को स्यार से रषना
ये हो र्त्ति म दार अस के चार्थ ये म सल कल सल जा च
गुर् के हो स्यार से रषना ॥ ५ ॥ हास के त को ज दु स्मन उस
को हो स्यार से रषना ॥ ये हो र्त्ति म दार अस के चार्थ ये म सल
म सल जा च दु के हो स्यार से रषना नागी के व न नाग उ स
को प्यारि ना कना ॥ २ ॥

राज ॥ ॥ द्वा प ना ठु नि वा मा ने ना ग न ल का ग सि व था
र का दे सि के जि ला ति गा ला ते र्त्ति लो ॥ २ धान को फुरि
या मे रो र्त्ति ग नि र्त्ति का न मा वि म च्यु ग रि ज रा वे ना वि को भा
का ते र्त्ति लो ॥ ५ ॥ रा ग धु म रि ॥ ॥ अरे किसि को दि
ल गा ना क्का त मारा का म दे : ये क तो पे सा आ फू ने व ये को
सरा ब द ना म ते ॥ पे सा न पे सा दि य तो वरि दि फू मा ना दा
व ते ॥ ५ ॥ जो करे सा धु फू किर ने सा व दे व दे न ल रा र्त्ति
॥ जो करे र्त्ति का फू त मे करे वरे ना वा न ते ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ नमने लग जाये सै स प्रितिसमा रो ज्वा दिल मेर हि
॥ तो मतो होई सई सै पा अतर के सि सियाः तामने लग जा मे
ऊ स विदार समा रो ज्वा न दिज मेरा हि ॥ ५ ॥ नमतो होई
सई यातन के हर निहा मने लग जा ये माहा जा त समा रो ज्वा
न दि मेर हि ॥ ॥ तो होई सई यातन के मरि हा मने लग जा
अ वं कु जो लि समा रो ज्वा न दि मेर हि ॥ २ ॥

राग ईंदर सो भा ॥ ॥ राधा जि के हो कै म से आ ये हो परि ॥
नाहि कि सु के सो नर मे गुलाई ते ह जुर को ह मुर आई के गा
डे डे सकल ॥ ५ ॥ ॥ सा ल व नु कि वी न मे का म हं क ह आ न हो
रि वि स मे गु लाई ते ह जुर ॥ मे रि का म ला ल परि प्रे म दि र धरि
सु को दो र ता प दा स भा मे न रि ॥ २ ॥

राग ईंदर सो भा ॥ ॥ आ जो रे ना नि द म स्था न को आ पि ज गा ग
म क सै या आ पि ज गा ग य क ॥ चौ वि क म य शो र दे षा का
हा य ले ग या सा मु नि सर ती मो ह न ला गी ई स के व रा ह वा उं ना
जो रे ना नि द म स्था न को आ पि ज गा ग य क ॥ ५ ॥ ॥ तु बे ला ल स मे
त वी त सु न ज रा ह वा सि धे के म भु त र कान ला जे वं दा ह
ल का ह आ जो रे ना नि द म स्था न को आ पि ज गा ग य
क ॥ २ ॥

रागरास ॥ ॥ राधाप्यारि पिरतिल गाई का हाजाई ॥
बचल बफो लमल कमल पल सोहे ॥ राधा के सं
ग जु कि विनारी ॥ ४ ॥ राधाप्यारि ॥ श्री विद्रा वन मे
ऊ ज क लिल मे प्रा हा न मिले ~~के~~ श्री राधाप्यारि
रतिल ई का हाजाई ॥ १ ॥

राग निरगु रा ॥ ॥ तो हे मना वल आई श्री राधारानि ॥ त्रि वार चार
बहर बातें रि कारन आई ॥ ते रि कारन आई श्री राधारानि ॥ ४ ॥ तो हे
पात पात विद्रा वन दुरे और मिले न दृग्म ॥ पुरत फिरतु म
थुरान गीत : कवन मिले वर साहि श्री राधारानि तो हे मना वल आई
॥ १ ॥ रागरास ॥ ॥ तुम संग मुराली स्थान नजै या ॥ स्ना मरे
उदरिया पक्षी राय स्या मा ॥ ॥ तामु सि मतु का धौ या तुम संग
मुराति ॥ ४ ॥ तुम यदि वे चन जात विद्रा वन ॥ तामे गौ बाराह
रे ॥ २ ॥ तामु माने तो मान कियो हे ॥ पै या परिके मोह गी तुम
संग मुराति स्थान नजै या ॥ ३ ॥

श्री गुरुदेव की
लाली श्री गुरुदेव की

रतीर

राग या चरि ॥ ॥ घाहुने लोद ज न की दान या वृत्त
 दन ली ल्ये वा भक्ति त या वृत्ते ॥ ॥ ॥ नदि व उति
 जु लो न ट या आ यु वृत्त हो द न म चो ल्ये तु ल्या द ॥
 न म ज न न ज म्प धर्म म या लो ची प न ल न ह द म्प न ई
 ॥ १ ॥ मो ह न या व लो न म्प मा या न लो ह पु ल म व न व
 म्प नी धा न ॥ म या क प्रो ह न म भा ल पु पा प ड को ओ ई
 व म्प न या का ॥ २ ॥ व ल य वे ल न पु वा ज म
 म भा ल पु ज्या ठ म म ल ति दु वी द ॥ वा या व क्प
 मा ली व ल ह व ची ल्ये पी हा ति ध नु ज न ल प ति ॥ ३ ॥
 राग मान श्री ॥ ॥ जये वाल कुमारे डीने भवानि तारनि
 जग डीविके ॥ ॥ माई मयूर वा योनि सक्ति धारि भक्त
 जन प्रतिषालन ॥ सीधीनि नोधीनि डीकीनि जोगीनि
 भुत प्रेत पि सा च नि ॥ १ ॥ माई कान मे कुंडल हात हा ड न
 वाज वंड सहित नि ॥ हात जोडल डम्ब क डी मि डी मि मुड
 माता भु धानि ॥ २ ॥ माई ये क डेत अनाथ ने सारन आ
 फु के डे हो मनोर न पुरनि ॥ सरिर नी र म न करि य
 भवानि दुष भये ल नाणा सीनि ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥

ABCDEFGHI

रागरेसि काहुला ॥ ॥ अरे माल नि याने नु मेगा येनु लम
॥ पकर के ल दु बा वा ला नु न न न न न न न न न न न न न न ॥ ५ ॥
फुलं जे गज रा फुलं जे के रति फुलं जे के से वनी ॥ अरे
माल नि फुलं जे के से वनि ॥ २ ॥ फुलं जे गज रा ले गयो
माल नि फुलं जे के से वनि ॥ अरे माल नि या फुलं जे के से
वनि ॥ ३ ॥ - ४ / पे माल अरे वनि न न न न न न न न न न न न न न

पक मनुष्य

राग राग ॥ ॥ वलि द्वारि लाल तो रे आ वना कि
॥ आव कि मन भा वन कि ॥ जय मन जय म
न आ फुलर हर ॥ माध्व भरि भरि आवन कि वलि
॥ १ ॥ वि दू वरा कि कुज कलि ला मे ॥ फुलवा
रि चित ला वन कि वलि ॥ २ ॥ प्रभा वि हनु ज
जा पाल न पावे यदि प्रा वत जवा लि नि या वलि
॥ ३ ॥ चंद्र सखि भजे वाल कि हनु दू वि ॥ हरि
के चरन चित ला वना के ॥ ४ ॥

लग ^{काठने} ~~कहा~~ ॥ ॥ हलु मान हो के मन लागे सर्म स्मृति
 वात लं काग ड जा के ल यंग मा के सी घान पा हो ॥ ५ ॥
 लखन नान धरति में जी ले मे वै ठो य खु ता ई ॥ होत मो त
 को ही को ह आ फ ना को की ॥ हे सा हा मे ॥ १ ॥ हम गी
 कु न की ए त न ही भगी हो पी ठ दे धा ई ॥ ल दो गी
 ल मो ल ल ड न मे घान ॥ हे जी मे ॥ २ ॥ न हो तिया के सो
 व हें न ही गी ले की ला ज ॥ ये द वी भी मन का ए न ने श
 हा ग हो की ला ज ॥ ३ ॥ ए न से भुगे ता ब ने मु नि ये प व न
 कु मा ए ॥ ह म की व न प ठा ई ई यो पी ता ग या मु ॥
 म ॥ ४ ॥ म हा नो की वा त है की या न ही अ व लो क ॥ क र्म
 ने का त ए ता न ही ना का हु को सो म ॥ पा ग ड मे जा ठ की
 ला मे पा उ ग ड उ ठा वो हा ठ ॥ ए व न के ह म प क र्म
 के भी या मनो धरि ला ठ ॥ ५ ॥ हलु मा हो लागे स्मृति ग
 लं का चर जो के वे दे म गा के तुर त के अ हा

श्री कृष्ण

श्री राम

श्री शंकर

श्री पार्वति

ति ॥ ॥ कैसारे ना ता जगत में ॥ २ ॥ तुम तो बुद्धा के फेरें जग
त में ॥ ॥ ॥ जब तक जो वे माता रो वे वे इति रो वे ची मा ॥ तीरिया ह
वे गाति न डी न पीछे फेर करे घर बाहर ॥ १ ॥ माता कहें पुत्र पुत्र लगा तु
हें बापू कहें सुत मेरा ॥ बड़ निकहे जावें न भे या तिरिया कहें गा
जो रा ॥ २ ॥ हार जलें गा ल करि जे सु के स जलें जो घा सा ॥ सु ड
र डे ह जलन नाग को ही नहि ओ वे गा सा ठ ॥ ३ ॥ बैठे कीतिरी या
सोच करे तु है वोत गये जो रा मेरा ॥ कहये कबीर सुने भाई भा
ई साधु जो न जो राति न तेरा ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग ॥ ॥ सत न्वीतान ड रूपि स्वामि ॥ ॥ ॥ जाग्रत सप्त
ना सु सु पति न मे प्रकास रूपि आफे हो ॥ ब्रह्मा आडि की न प
तं जं में सादित रूपि आफे हो ॥ १ ॥ तिन सरि रूपं चर को सैं ड स
ई डी में आफे हो ॥ २ ॥ इत्ये वस्तु क द्यत पत आदि का न को ध्रुवो
भ में आफे हो ॥ ३ ॥ जुग त बुधि सैं बी वे क कशि के म न्में ड वो आफे
हो ॥ ४ ॥ ब्रह्मा ज्ञान सैं व सैं होगा भग वद हरि को कट मारे ॥ ५ ॥
नाम जगत ॥ ॥ वाग स मर ले ल मेरत कर ले को जाले क ॥ ६ ॥ को
रि को रि सा यावतारे वात करे हल की पाप कि नारि स पर दारे को क
र हो हल कि ॥ ७ ॥

राग ॥ ॥ मोह रे स म कि सारे मि गनि धातो कनि धोमो
मोह ले जा ॥ ॥ जोता कि ना रामे दारि यामे धारे हा हा मेरे जमा
बक बान पु छ त सारि लागी मोरि लागी वि फु त मा ष नार मा
र ना मो हरे स म कि सारे मि ॥ ५ ॥

राग विरहि ॥ ॥ मेतो जो जीन बनि म पू ना मे ला जी जोगी न
पनि मेतो जोगीन बनि ॥ ल करि ज ले सुं कोहि न योहे ॥ कोहि
लाज ल सान सारा मेतो ॥ ६ ॥ लोता तोता दाल से बा लोग
पवन उराया मेतो जो ॥ नदि यावि नारामे बु ना तु नहि दे
बल के सति सारा मेतो जोगी नवनी ॥ ७ ॥

राग ॥ ॥ आपे क ह या मोरि न न द त ज न न्यारि ॥ ८ ॥ यकल ते
अनारि धन क तत न यहे ॥ यकल छारि के का हा ज या हो न्यारि
॥ ९ ॥ प्रान पि यारि तु न का हा ज यो हे ॥ मेतो अ भा गी नि का
ह यो हो प्यार ॥ १० ॥

उदे ग सु त घने उमरी ॥

संवत् १८७१ साल वैशाख १ गते रोज

लीखीतम धनी का नाम राम को नाती कृष्ण को छोरा
लपुट पुल चौक वरने वषे रुप को चरन वा हा कुर

जय सीव उं काए हर सीव उं काए सीव सीव उं का
रा प्रसावी द्यु मेह शर

जय सीव ह उं काए सीव सीव उं काए प्रसावी द्यु मेह शर
सदा सीव जे ओर वजे सीता रावत प्रसावी द्यु मेह शर

मो जा मन नारायन रघुमर

राम राम राम राम राम

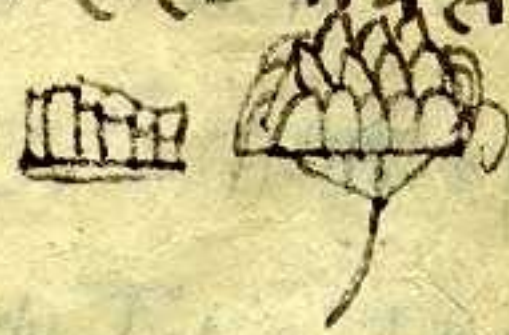
ओ ग वीसापानी धी का हा को म को ऐ-दा के य नो ची

उ प्रा न्त आफ ना काम बी दा ये ले वना एस संभ्र जान

स नी बा पुट की ती पुट वरने वषे रुप को वरि गह जो ह

राम कृष्ण मेघ जलान

ली रतीत मधनी का नाम राम को नीती दुःख को दार लंपुइ
पुल चौक वरने वषे रुप को रनवा हा दुःख अथ चन व होम
नी को नाम नीत को नीती चक्र को दार लंपुइ इकु हीती
वरने वषे रुप को राम प्रहात पा धाल ली हल जत चल्य चा
ही मो हर मान सय एक अ ओ पी मो हर पाय सय एक
श्री सी नती के अलुती भजन



श्री संकर के दमरु से नीकला (धुपती राधन/जा)

॥ कंधवीरुही वीरकेनी मोरिखान ॥

छाडी चले वही भावु तापरे मोरे छपवनी देना है मोरे

नाः ॥ कागा कागरे छपतलाले चुनी चुनी लखे मोरि ॥

दुनो नरा मनुष्या कागा भिखारी दान के आख ॥

॥ मनुष्या ही लोयो धामने नीली के वित्त के ॥

वेबुद किया दोह दारने गुल्फ का वीर भावने ॥ मरयो

मुकुट मोरत कुद तट पदी पगीया ॥ लाल लाली

की लोरो को दान ले लगा के ॥ १ ॥

॥ मधीलि राम चरन चोत देवा ॥ मरि वीर

उत भात को ईध मई कही साथी ॥ लव नगे मे प्रभु

राम के लख मरने के प्रभु साथी ॥ लव गी ॥

॥ मधीलि प्रभुता गिरे चेतन समाया ॥

उलवा नर को बाद रवो मन मे ॥ लाल लाल को दोडी

मो मने ॥ लव नर ॥

रागईद्रोमा ॥ ॥ गतिह और ना च तदा का महमेरि ॥ ६॥
भाफाकमेपोषरानपरीनामहमेरि ॥ कर्तिकाषजा नयेनेनामह
मेरि ॥ ॥ व ॥ परदिसेमेरि को हि नि का लि नाह पत्ता ॥ यराग
ल सनम आरु मोवेका नामहमेरि ॥ ७ ॥

रागधेनर ॥ ॥ देने हो क्या धारो रावां लख्युं गहि वाले मजा ॥ कौ ॥
बिरत फरे सोत मजा ॥ धिरो ने परिगयो ॥ मोजा देने हो क्या ॥ व ॥



22

9^v

290

21



राग सिन्हाणा ॥ ॥ हरि हर जी करम देव के नरु के ॥
 राग कछाहि ॥ ॥ रगु बट आये सीताजी देलात मुनि
 के जगए बने बाने ॥ ॥ ॥ आये नरु जी के धाम आये
 गोषु ना को ग्रा म ॥ ताप हट प्रता वा म ॥ कुच में जह
 ट लगा ने बाने ॥ १ ॥ आया जन क प्रदिवा टो ट न
 व भुषने के माट ॥ नतो की यान ही जभी मान सी वदे
 धनुष भजने बाने ॥ २ ॥ सीता बा ही आये टि बान
 माता के के भ इ उ डान ॥ नु ट न भये न वान अही ला
 प ट ला गने बाने ॥ ३ ॥ छील में बान ले से ज ल का
 गध में की मा बेज ॥ वतो मा ए भी भी वन हे हे न
 त ला गट सीता त ए बने बाने ॥ ४ ॥ माए नी हो वट
 बी ट जीते मे घना ठ टन थी ट ॥ प डुव सीता जी को
 ती ट ली का घु म म बाने बाने ॥ ५ ॥ ली का जीती आ
 ये भन धा पटि धा नु करि आये स व न टन के काम ॥
 एषो स टन की तो टि ला ट न म के फुड की टन बाने ॥ ६ ॥

[illegible]

जुहुं जाहुनि मई नजीष भति ने व नहा ॥१०॥ मद्या
ना भाजु छीन दुउ नडये के तेना जीवगु जुलसा नेने
नहा ॥ मेवता मधुमई छन पजाउ बना काम त भति
सो भजुल नहा ॥ चाकु गु वचन चाई के मते मई चाकु गु
चाकु का व द्यो व नहा ॥११॥ गठिन भाजु न दु उजन रये का
छीन अम वजा जी मनस मलो व नहा ॥ १२ वला छ
जा ना भाजु जी छे मये मो नहा ॥१३॥ आये ले मई हा ये
जीगु छगुति न छन जीत तापा का पदो न नहा ॥ १४ न जीत ता
पा कला जीन छ ताप के आम पुम ज्ञा पीपे मज्जू हा ॥
सयेन पुठा ये धुन जी वने ते छ नहा ॥१५॥ आ प्रगठ
मये जीन दु प्रकारन याये नु ग ल क ची गल जुल
नहा ॥ कारन मड ये क पुठोत ध का भेनि कारन दु दु ध का
कने हा ॥ कुगुजा पुस्वमिनि सीपे के मज्जू गु पतन द्यो य हा
॥१६॥ भाजजा हुं ठेन आव गठे याये जीन नीस्कारन
पुफुत के मज्जू व नहा ॥ आसेर भाजु हा ये बहता किंति याये
ठराग सी हा नति हा हा धुनि वस अवेर जु मे ला
दिये ठे म पुला नहा ॥१७॥ भाया जा ठे भाजु दी वन ने
ने जुल जीत जा धन विन द्या फो न हा ॥ मे कता
मधु भाजु पुस्वमिनि सी ई ध का धुनि मिनि सी न
ज्याना हा ॥ प्र कास म पा त ला भा जु तु रत ने ने नहा
॥१८॥

वाग ॥ ॥ रुम्माना नाना देर ना दे रे ना नाना देर ता रे पायेः

प्रवेदिता निहाइ हरनारना ता दानि ॥ पुस्तकानामा नमन

~~न न न न न म ना दे~~ नात्तरा वा वा

राग २१० ॥ क्रीडा निदिम तात्ता नाता नाद रना ॥ देता देताति

दिम नाना दे देना ॥ देना ॥ देना देना धिम नाना देना

ॐ विष्णुमहेश्वरं नमस्कृत्य नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ १५६ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ ॥

१५६

राजधनार ॥ ॥ कथा ॥ हट्टे ॥ चमुराणि ॥ श्री ॥ विष्णु मन्त्र ॥

सुवर्णनिका। लोपुलिपकादपरदुगचमुलि ॥ व ॥ मोरिदुगमेजव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

राजा घघातीका द्वारा यदुका वंशमा बसुदेव नामक यादव जीय
इनको राजा उग्रसेनकी पुत्री देवकी संग वीरवाह भयो वीरवाहका
अन्तर देवकी हाइ घर पठाउदा कंस आफै लारजी बनेर जान
जान हाउपको बीयो यपी मैकाभा उसहे छर्खिँ अहीहे तसहाइ
पुनः याउन जान हाउपको दस दुसैको आगे गर्तिहे तहाइ जानैर

श्री

आगे बीसापानी जघी कहा काम कारी-दा के यनो बीत
उप्रान्त आपना काम बीदायले वनारस संम ज्ञान म
नीलपुइ कीतीपु वसे वषे २० को वरी जह जोरु मय
कोल राम कृदम ओष धनव हो जरी भाताम

आगे बीसापानी जघी कहा काम कारी-दा के यनो
बीत उप्रान्त आपना काम बीदायले वनारस संम ज्ञान
न मनीलपुइ कीतीपु वसे वषे २० को वरी जह जोरु
लीरवा तम धनी को नाम लपुइ पुल यो के वसे

रुहो स्वामी की लवा ममा जगप साहि ल अल गुलपारी य
उग मापाम मयी लकी की लवा ममा जगप साहि

राम राम धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म
राम राम धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म
राम राम धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म
राम राम धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म धर्म

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥

गोपीजीको अस्तुत्य भजन ॥ ४ ॥ कींकट के दम से नीकला ॥
रघुपती राघव राजा राम ॥ ५ ॥ नारद के वीणा से नीकला ॥

१७५१ १२५२ १३५३ १४५४ १५५५ १६५६ १७५७ १८५८ १९५९ २०६० २१६१ २२६२ २३६३ २४६४ २५६५ २६६६ २७६७ २८६८ २९६९ ३०७० ३१७१ ३२७२ ३३७३ ३४७४ ३५७५ ३६७६ ३७७७ ३८७८ ३९७९ ४०८० ४१८१ ४२८२ ४३८३ ४४८४ ४५८५ ४६८६ ४७८७ ४८८८ ४९८९ ५०९० ५१९१ ५२९२ ५३९३ ५४९४ ५५९५ ५६९६ ५७९७ ५८९८ ५९९९ ६०९० ६१९१ ६२९२ ६३९३ ६४९४ ६५९५ ६६९६ ६७९७ ६८९८ ६९९९ ७०९० ७१९१ ७२९२ ७३९३ ७४९४ ७५९५ ७६९६ ७७९७ ७८९८ ७९९९ ८०९० ८१९१ ८२९२ ८३९३ ८४९४ ८५९५ ८६९६ ८७९७ ८८९८ ८९९९ ९०९० ९१९१ ९२९२ ९३९३ ९४९४ ९५९५ ९६९६ ९७९७ ९८९८ ९९९९ १००००

रागवाह मातः गुली तफ सातवी घेत्त एण कदम
 नुदरसनकी वजीत कहु नानी धानः गुलीः क
 चेतस भजी स्वाहा या चोनवनसः वेसा क च
 शास्त्रान गुला प व च स्वा ॥ नालो बल ली मा व
 सैतपा नी नन गो पाग चो न देव दो गवीर ह
 नरेः गुली ॥ १ ॥ जेष्ठ चमेलीः चव खान नील स्वा भा
 जाद मीना मदु हो या चोन च स्वा ॥ २ ॥ चप जाता घ
 नरो द लप मफ पा सह पा ना चो ना घन चो गुवी
 रद नोः गुली ॥ ३ ॥ आ वरा माल सुकु दरी राता भाद्र
 पल खान ई पोल चव स्वा वर मा पारी त ह्या नन
 लस म ड मी चान बो की हाल दो गवीर हने

राजपुत्र ॥ ॥ प्रेमचंद्र तोर सित प्रमत्तादयक ॥ ॥ श्री ॥ दम

कि ~~कि~~ कि सारा जयक प्रेम ॥ ॥ श्री ॥ नाद छो यातु कि नाति करत

ॐ सलन नवाक भाग्ये ॥ ध्यान जगन मे ध्यान करत तु सलन नवा

क आमने धर्म सर्वेद्र तोर सित प्रमत्तादयक ॥ ॥ श्री ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥

भा श्री न तुलसी मन्त्र सी लक्ष्मी धव ती को स्वान काती
क शानी तका गोदा गोरी स्वान ॥ मद्रो रीति न्या चैद समा
दम है ई ई नीरु न्यन प्रभु दी गवीर रह नरे गल ॥ ५ ॥ मार्ग
॥ कच बल हो पा चोन दाप स्वा प्रोन वष मद्रु सीना मद्रु
च स्वान रे ॥ ॥ हम तरि तथा ~~कि~~ चिकु सहल पेम प्र
वा मद्रु धाना चोना देव दी गवीर रह नरे गु ॥ ५ ॥
माद्य मे करवा ~~विद्या~~ कर्गु न भतु स्वा हा पा
चोन भार नमन जीम चोनो ॥ ॥ रीत ह्री ते गु म
न दै के नतु जलो पुन पाजा वी व जीत वत
रु नाना री ध्यान ॥ ६ ॥ ॥ लीन प ॥ ॥ त वी

राग देली: नारि सी वनी के जो वर दान का हे करे
 भागवान: ॐ: जो कही नसी बने हा मो जुलायो
 जो ताकरने सब को जी पारा ॥ जान पीन की
 अच वन की जो ही जे ली का दान ॥ १ ॥ गदली का
 की बुल हा मा रो जा के ई न को नाला ॥ भाई हा मा
 रो कुत्र कर रा मे मे घ ना ठ व लो न ॥ २ ॥ मेरा
 वन की पता ली राजा जा के ई न को ताला ॥ रा
 म ल धा मन प करि मे ग ई मंग चले दन मा
 न ॥ ३ ॥ स्वर सीं जु हरी गुण ग ई नारा घेन
 को ध्या नल गाई ॥ भाजी र ई न को की व्य क क
 नी भा बी र को ही न को ही: को हे ॥ ४ ॥
 राग: मो रे बा मो रे रा वा वं म सी मे रे वं जात बे सी
 के र ब जाना ॥ ई न बा रा ही नाल सुरना न्त पुती
 सब रा रे ॥ ले कर ध्या नल गाई: मे कर ध्या
 नल गाई व म ली के र ब जाना ॥ ५ ॥

राम राग देली का नाला

राजमालश्री ॥ ॥ जये वाजपयसि देविवचानि तार
निजगदीविके ॥ ॐ ॥ मधुर वेषनि सक्तिं धार नि न
त्त जन प्रतिपालनि ॥ ॐ ॥ सिंगीनिवप्राणीनि दीकिनि
ओगीनि भुतप्रेतापिमा चालति ॥ ॥ ॥ ॥ ॐ दलहात
कादल बाठा वंदसहितनि ॥ ॐ ॥ लालजोतल लदम्बसदिस
दिमि मु हरमाला नषानि ॥ १ ॥ कंदला भुनाथने सारन
आफुके देखो मनोरथपुरनि ॥ ॐ ॥ सारि रतिर मजके
रिये भवानि पुषभयेस वनासिनि ॥ ३ ॥ ॥ ॥

आगे योसा राजी गधी का हाथी

कोहि वाल खले आपना वा दु संज मक कि वष को भ
ले भानि सो लो कुले म न्यो ले रि आमा मभ-वा प व
ष को ह

सुभाभ वत कल्याणचारो ह्यधनसंपद
ममराजकीनासापेदी पञ्चोत्तिनमनुदा

श्रीगणेशानमो

• साधोतर ॥ ॥ भागे तुम बहुत तुर है कि जगत सा हरि के

ध्यान ॥ श्री ॥ जब दिन दुर्जन तै संगत करे कि ॥ विस

वाह कारि के नाम ॥ १ ॥ सजन तै संगत करे तो व० लग

सा ला भ होगा ॥ दुर्जन तै संगत करे तो व० स गुरा नाम

होगा ॥ २ ॥ सजन तै संगत कर्म करेगा ॥ दुर्जन करे

सदा पर त्रि वाह ॥ ३ ॥ यहि अर्जि बुधि सम कीलेगा

तो यहि ॥ ३ ॥

राग ॥ ॥ गगनादुते आ पुर नि रंगा पर गगनादुते ॥ १ ॥

उम गयो पारि काम गयो पारि ॥ आपु बि रंगा पर गगना

दुते ॥ १ ॥

राग नीरगुन ॥ ॥ मी डोल मे जगना ठ हरी वन बड सुभ डर ही स न

पाउ ॥ १ ॥ गोरि बडि वाते माला पहोरे तुम ॥ तुल ही के माला कठ

धरे ॥ १ ॥ आगे आगे ~~हनुमन~~ नो दे तो छे राम चेड पीछे पीछे न

अमु मे ॥ बीच में धनुष चला गये ॥ २ ॥

राग ॥ ॥ अति सया नाने मगा कल को द का ठ ॥ १ ॥

खान माघा मु र मा मा मु ॥ पुपु पु न हाना नई म गा क

हाना के ना ठ ॥ १ ॥

रागः ॥ आपे कन्ये यो मे हि नंद सज्जन हे प्रहारि ॥ ५३ ॥ एकत हे भनारि
प्राण वसन भयो हे ॥ यंकल खारि के काहा जघा हे प्रहारि ॥ ५४ ॥ प्रा
न पि प्रारि तुम काहा जघा हे ॥ मले अभाणी नि काहा चले हे प्रहारि ॥ ५५ ॥

रागशेकाविरहिनिः॥ ॥ श्रीजीनमाहारजविराजप्रभुमिथिविराज
क्रमसाहाः॥ ॥ श्री॥ तोजपति यसीतनमोः॥ दुसमनकेमोरेवां श्रीमा
नमाहारान॥ ॥

राग ॥ ॥ हे गोविंद वसिष्ठो प्रातःसरतः कावद्वि नृ ॥ श्रीसिता
पद्मपरिजुषालषष्ठाग्रिभता ॥ सुमेरुकोसवर्धनसलकलमुना ॥
जोबी ॥ ॥ वल्लभं त्वं मालिनीं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॥ साताय ॥ ॥
सं कर्मभुक्तिके जिथेन हे गोविंद ॥ २ ॥ रत्ननवतालषसं थेनामवा
मिसा ॥ ॥ कोमौवान नजिचोनाहेगा ॥ ३ ॥ हल्लाघोघाकलजुषाभवद
दिनता ॥ ॥ सैव नवक्रगदापदमजोना नविज्याव हे गोविंद ॥ ४ ॥
गलदगोविन्दा कद्वि न ॥ ग्रहभृगुमन हे गोविंद ॥ ५ ॥ ॥ ५ ॥

॥ रामायतिः ॥ ॥ रामनामकिनामलेनामगव्यो वेतसि रामः ॥ ॥ ॥

गिरजा पुं प्रतपे वा पि को अत्र पुं क मकुं जाने ॥ मा ई स प्रतपे
व्यरि पि को मौला रि पि को का सा लो व पु वः ॥ ना यो क लि अ ग मे
वे सा कु वे लो स व ने उ न कि आ सा ॥ ग रि प कु वे लो हो भ कर लो ह ते
प न र न धि का व पु वः ॥ २ ॥ मा ता पि ता मा र्म ति जा स व ने कु न कि ॥
वे र् स कु वे लो का ल प कु चे भ व र प कर के ह्ये वा व पु वः ॥ ३ ॥

राग निरुद्धा ॥ ॥ हान थधिपाग जन्म कायेई मछु अवसर ओ
निमन पद्यु तो वेजुयु ॥ ॐ ॥ लामना चोत माया जालया प्राप्त ॥ ॐ
॥ थथे तुलु मन का हरिजन माना का ॥ १ ॥ दृष्ट्या दिन रु
उमराना मोया चोनि ॥ ॐ ॥ थमयाना गुज्याया परल पावे
उयु ॥ २ ॥ आवत ईश्वरिया भजन मयाला ॥ ॐ ॥ लख नोरा सि
जोनि हिले मालि ॥ ३ ॥ भजन मर्दत जालये साधु पि ॥ ॐ ॥ आ
धनेने थाना मत ईई कति हान थधिजाग जन्म काय ॥ ४ ॥
राग निरुद्धा ॥ ॥ जगत माया के त कावत ल ॥ ॐ ॥ मुनेष
मा जन्म मडुरे शदा न धरम करम सोरे हुने ॥ ॐ ॥ थो पान
नाथ था अठु गुनि धेव हार राम याना म कावरे जग ॥ ५ ॥ दुष
था वे लु स मन थो वेराय जुल लुम नि कु मति नि गु सो हुने
॥ ॐ ॥ ओने चोने वे लु स न गल छिन राम या का के वार नारे
जगत ॥ ६ ॥ माया या जालन जो क पु हो तल सो धेई नि दा
सो हुने ॥ ॐ ॥ भमया नंद निरगुरा हाल पार पार गुणा भनि
रजत माया न के ॥ ७ ॥

राम भजन ॥ ॥ तुम विनुता थ सुनै को नो सरि ॥ ॐ ॥ ज

भरिसभा विद्यालसभाराषोषैवतनिरदुसासनकेरि ॥५॥

॥१॥ लुत्पामेधुआसा चरसा का देह हरन क्रो व करुन

देहि ॥ ३ ॥ कश्चिज्जनकागमा पुन वदुना द्युति ॥ ३ ॥ ४०

उदेगसतमते अमितससि वरोरो गोमहिमं दनेला
 न वदसुजे सुते गतागता विव्यो व्यो घो पव्यो घो
 मदा राय पंच वि सु वसता सहितं वेला वतुलना
 का

रागनिर्गुन ॥ ॥ धरति काह केन गई: अब सुन लीजे हो ॥
 सब भाई ॥ ॥ ॥ सत्ये युगमे हरि नाम कुसराजा ये कहो ॥
 की ई ॥ सय योजन हो बलिहिजे राज की तना सैग ली ई ॥ १ ॥
 नेता युगमे रावन राजा कश्चन कोत ग ड्यो ॥ ये कल रब पु
 न स बाल बनाति सब हो को तेन ड्यो ॥ २ ॥ हा प्र युगमे दु
 यो धन राजा हलिना पुर ली रही ॥ यक डल हो डल बहु डल
 जोरे मरति को नाई भई ॥ ३ ॥ कलि युगमे श्री कल राजा म
 पुरा प्रगत भई ॥ कंस को मारी बी धै स को यो है गोपिनि
 सैग को ही नाई भई ॥ ४ ॥ सत्ये श्री हा पर कलि चारे दे छत को
 त गई ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधु का दे खत भुलि रही गा ॥

राग: नकता: गदरा: कहवति तल

आजपंख
 रघोरतली

गारे गम कानी सा ना कल गई जाते जा
 ते: हा हा मारे ज्यान: जाते जाते हा
 मेरे ज्यान जाते हा हा मेरे ज्यान: तो: ॥ ॥
 सबल देखा लाये पो दया मुह के मा
 तुने: हीना मे पारे तुने र गमान धा
 राचीट: ॥ पारी मरन की हीला सनी का
 गमान: तोरे गम कानी सा ना कल

राज अस्तुति ॥ शिव शिव जय मन्त्र लोच

इजननशवह रिह रज कमनलाग ॥ ॐ ॥ शि श

जनाहातिवदनसुहाये ॥ विनगायेनसत्रिननिभ

नलागायोहि सरिरुज वमने लाज ॥ ५ ॥ वीसे वगं

नरदमत वजाये हि वभागचतुरकि फा ग लजा

ये शिव हरि हर जयमान बाज ॥ २ ॥ नाचत हरि

गणवेल-बहे सिवजौ रिजसो हा कु मार हर शिव विन

नयमनलाज ॥ ३॥ इतरापुत्रवतिकहतकवित्त

तु यद्गार्थं स मायवो जेतुं वरुहिरुजं यमन

॥ १ ॥

सप्तमः

राजपुत्राय नमः

रागशशिनि

28

अहं किमपि न जानामि तेन न मया न दत्तं नो धनं

निष्पुष्टि न अवसथः

नमस्तकारं यथा कुरुते नैव हस्तं को हि न मितं न न

वो धनं नमस्तकारं यथा कुरुते

राज्यादि ॥ ॥ तु मादि दित् किं नादि नादि

मैं अैं से नादि ॥ ॥ अैं से तुम ते सर्व पथा रितु

मादि दित् किं नादि नादि मैं अैं से नादि

॥ १ ॥ तहर्व नादि दित् तैं फिल तैं तमा म हो तो

दि कादि मैं अैं से नादि ॥ २ ॥ तहर्व नादि

या दित् तैं दित् तैं फल नादि अैं से नादि

लः दित् मैं अैं से नादि ॥ ३ ॥ ७३

७३

सद

राग

में के

जी ॥

राग

विद्रा

राग

मन

पारि

राग

मे

साय

दिल

राग

जेधि

लौ

सदर वरदुन वैधे रहना कि सका मन को जाना ॥ २॥

राग ॥ ॥ न जानपी याजा को यकल परलागी ॥ आवी आवी सने
में को याति वो ले जंगल में वो ले वो लंन जा गुपि या जा को यकल परला
गी ॥ ४ ॥

राग ॥ ॥ सारि के रामासन मे रि वितति वो परदामा कहुन लागी ॥ श्री
विद्रावन मे भै सेन वो लना यो परदामा कहुन हि लागी ॥ ५ ॥

राग सजन ॥ ॥ हे जो लाना थ दिग म्वर यह दुष मे रि हरो यह दुष ॥ व
मन नामल वैल कि पति या सिव जि के माथे बरो ॥ हे जो ॥ वारि पतु पति
पारि गुजे धारि विच मे गंगा बह मोहा ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राग ॥ ॥ दिल फे दे पति तुलसाराह मे : वो सान दि या दो वाराह
मे ॥ ७ ॥ मे फिले मजा ता उन को बुलाना ॥ ८ ॥ ने ना से करति ई
सा राह मे ॥ ९ ॥ जे से सह सता हसे बुलना बोनि नहि है ग वाराह मे
दिल फे दे पति तुलसाराह मे ॥ १० ॥

राग ॥ ॥ सते धरम तो लते विन धुन ला गुज दिन दुनला ॥ जी
जे धि जुध का से बलि धुन ला ला पा पा गर स प्रि सि ला मन
लो जु जु लो मतल से ते धरम तो लते किन धुन ला ॥ ११ ॥

॥ श्री लीनजी को अस्तु ती भजन ॥ श्री शंकर के दम से नीकला
रघुपती रावन राजा राम

11 6 11 11 11

श्री सीतजी को अलखुली जगन ॥ श्री संधा के दमहर से नी कला
 द्युचती सधन राजा राम ॥ ध्रु ॥ नारद से नी जासु सी कला
 जी रवीतम धनी का नाम सहर काठ पाओ वरने लगन
 सोला वरने इपा मलाल ओषधन ने हो मृती का नाम सह

रामनिर्जुन ॥ १॥ गोविन्द भिंके भासा राग जो पात्र तेरे भासा
राम ॥ पुजा करो गुरुगण सका इत्यादि नु महे श्वरका ॥ ५॥ सि
ता राम लक्ष्मी भन को गारि वरदा रिस्या भका ॥ तारा विपुला का लिका
के दार रश्मि हर हरिका ॥ २॥ आदिनाथ नीरव जनका पारवति सिक
सैवर का ॥ गोविन्द ॥ ६॥ ॥ ॥

रामचन्द्र ॥ ॥ धारि भौकि होस उति हे नील की सान पर ॥ नील परि हे नाम
मेरा उग्र रहे अस नान पर ॥ १॥ अलहरे की करि मेरी जमाने महुहा ॥
वज्रहरे सर्व लीका हे निर्गली सान पर ॥ २॥

रामचन्द्र भवतु कल्पानि आगे गे धन स पा म म मरु की ना सावे
रामचन्द्र भवतु कल्पानि आगे गे धन स पा म म मरु की ना सावे

रक्षा या इत्यादि उति उति काही स्पवक या इत्यादि काही ॥ रक्षा या इत्यादि ॥ १॥
जोगी जी वेलाह उही उही जाग या गृही गृही ॥ दुष्ट देखे यातं य गीत
पेदक पाही ॥ १॥ अतथा सजा कुही कुही आपा आपा नय पुर
गृही

रक्षा या इत्यादि श्री

व नामक घाटव नीचे इनको राता उग्रह नकी पुत्री देवकी
संग वीवाह भयो वीवाहका अन्तर देवकी हाड धर पछाउदा
मंस अपै सारनी वनेर जान हाउप को ॥ नीयो यही भौका
शा उस्तै मरित ०

श्री

राज ॥ ५ ॥ श्रीकृष्णनामय सरण तुमारे श्री कहेनाम

उठारे ॥ असनीवरुनी उती सुन्दर मुरली कोती सुरज

मानी ॥ ६ ॥ हरी हर प्रभा इनका हस रूप धरे गगवान

श्रीकृष्ण ॥ १ ॥ तीनी लोक प्रती पालन मेख जोगीने

सावी ॥ जायस मुन्धर वेद उधारन प्रकत मेखन्दे नाव

कलकनी पारतो वसंकस्त लागी भक्ति को हीत करी

लोक नाव प्रभु भुला मुन जाये उधारे ॥ २ ॥

श्रीकृष्ण ॥ ३ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ४ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ५ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ६ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ७ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ८ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ९ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ १० ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ ११ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

श्रीकृष्ण ॥ १२ ॥ भिगाव भिगाव भिगाव भिगाव

पारिजात

राग असुरा ॥ ॥ व्यास वंश गुरु ज्ञान
जरा सया मन फल पाया हो ॥ १ ॥ अष्ट विंश
कामिद क-चौरे फल को दाता हो ॥ अष्ट
सिद्धि एव निविष्ट रागि नारा नायक
सुख दाता हो ॥ ४ ॥ करि बल व-दरा सुख
र भुज विराजित सिं धुत अगल गा पा हो
॥ बाल-व-दरा सुख प्रविष्ट रागि नारा प
ति नाम कदा पा हो ॥ २ ॥ गोरिण-दरा
सब सुख दाता पुरुष नाम कदा पा हो ॥
आदि अंश एको हिता हिता पा हो गरा प
ति नाम कदा पा हो ॥ ३ ॥ सब का सरण
सुख दाता रिखि सिद्धि सग तेरे हो ॥
गोनर व्यास गोर सके लाई सुफल हो
तेरे का पा हो ॥ ४ ॥ चौर व-दन को द व्या
वत पुरुष अल क अविना सिनि हो ॥
माता लहा प्रतित मह गत चरा ल
रा सुख दाता हो ॥ ५ ॥

रागऽभजन॥ ॥ राम तु न सां चो मन को मिथो ले से ॥
कुं॥ कव धाये हा मका सिचलि आई॥ धां च फूल भो
जन को चाहिये ता हा पर करत गुमाई ले से ॥ १ ॥

सगथे का ॥ ॥ हजुर के ओ कल नोद पुत दरवार कित
ज विज मे ॥ ज मो ल अ दा गु अरा कार वा ना कि भाति
२० काः ले दन को उप सा रा हजुर के ॥ १ ॥ जं जी कार
णा ना त ज वि ज मे सु चरि जल त या रा ॥ श्री ॥ वि स
थि जो ले कि तो प वनि हे द स री छि दु ते पू रा हा ॥ ३ ॥
औ से प ना पि रा ना ना हा दुर आ वि र स्म से र वा हा दुर ॥
औ से गु धि मे म स न र ज न र ल जे ह द्र स्म से र वा हा दुर
॥ ३ ॥ अं ग्रे ल रे ल च ला यो दे स मे ला वा स भा न मे दा
म मे दुरा या ॥ वि ना जो रा कि व गार ना ति हे ला वा स भा
न मे दा मे दुरा या ॥ ४ ॥ औ से अंत ज्जा मि पु स हा न
क ग्राम तो रि व क स्मै अ नी ता मा हा रा जा ह र क
अ कल नी द ल ग ह र ॥ ग ह रे रा ग रा ग ह ह रे

हरे

गी०

गीसीनजी के अस्तुता भजन

गीसंकर के दमरु से नीकला ॥ रघुपती राघवराजा राम ॥ १ ॥
नारद के वीना से नीकला ॥ प्रतीत पावन सीता राम ॥ २ ॥
अर्जुन के गाँजीव से नीकला ॥ जय भद्र धुन दन जय धन ध्याम
॥ ३ ॥ द्रोपदी के आरव से नीकला ॥ लज्जा राखे हे भगवान ॥ ४ ॥
सखी के वीन से नीकला ॥ भाव के भूरे हे भगवान ॥ ५ ॥
भक्त प्रह्लाद के मुख से नीकला ॥ भूप राम और तुँ भी राम ॥ ६ ॥
भारवेद सहस्र सहस्र पुकारे ॥ हरी ओं हरी ओं सीता राम ॥ ७ ॥
भीराव के भँठो से नीकला ॥ जय भद्र धुन दन जय धन ध्याम ॥ ८ ॥
गंगा के लोह से नीकला ॥ प्रतीत पावन सीता राम

भक्ति ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
भक्ति ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
भक्ति ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

राज इ मन् ॥ ॥ आये कुरु व मा
शे शक ल व ग च म

राजः जीवना हीर दारो हरी हर बोला नामोरा जगामे
॥ आफु सार थी हे सब दुनी या ॥ दुती गये स
नी सा जगामे जीवः नः दान की दा स आ सा चर
न गुरु ॥ कुठा हे सनी सार जगामे जीवना ही ॥ २ ॥
राग रामः जे से का बानी पुरा सम नवेन ही
मा नरेः नवेन ही मानरे जे सेः जाई जो कुल
मे भु म की पाः मा बन बुद चो दाई चो दाई जे
सेः ॥ चंड स की भजो वाल कर्म दूकी हरी के
चरन मे ॥ चा हा ॥ १ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

संभवत १८५२ साली आवाय नमजते गोज ७ माझी झीझीझी झीझी राजचंद्र
महाराज ७ माझी झीझीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी
नोतल बाकोरो रार दोरे श्री भगवत ७ माझी झीझी झीझी झीझी झीझी
ओम ७ माझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी
लीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी
लीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी
लीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी
लीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी झीझी

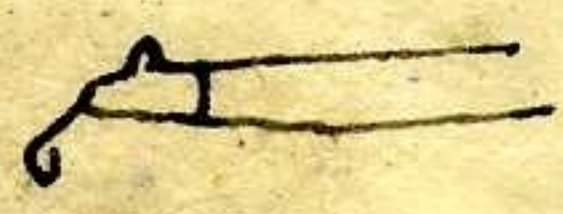
समोठका ॥ की॥ यमुनातीरे लत ह्यामा ॥ की॥

अति

राग दादरा कर्वा : जब घाद हते रि आई जे
नी कले हा मारे हम : काले काले जाले
जाले गोरु हे व हन ॥ जब तक मे दे रव आ
पुकोनी कले हमारे हम ॥ १॥ माली जो आ
पु बाग मे करते कल कल ॥ वरु स कलम
के बी च मे फूल फुलेगे हम ॥ २॥ सी सी भरी
सगरा पीली ये : सनम सनम ॥ ई सन के बी
च मे पेजा परेगे हम ॥ ३॥ तोता बनाई तुम्हको
तोती बई हमें ॥ पीज रि मे रघु आम्ह को वो
ली सुनेगे हम : जब ॥ ४॥

राग दुमारे ॥ १ ॥ चार पीतमू देय भीयताके बरननकी बली जाई ॥ तन
परहे धौवनकी तीर लागी अगीतकी हरकी पीर ॥ मराप जसे जात सार
काय तनकी वीधा सु ॥ १ ॥ हे गीत दूत ह मागी वेंस ॥ बाल मू दूत हरे पर
देसने जाको काना न्यस ॥ केले में मनको सम होई ॥ २ ॥ सोको ये ही
वडा अनयस ॥ जो ने वसेको नसे देस ॥ अवधारले द्योमी नी कवि स नेली
धार गले मो जाई ॥ ३ ॥ ये नगवतु लगी ह दारे ॥ रही रही दिल में ठकती
लार ॥ सत गुह कपा करे मम और दास नू पाती अने का पाई ॥ ४ ॥
राग दुमारे ॥ १ ॥ तेरी कुह दत के कु राना न दो नो जहा बगाने वाले ॥ १ ॥
सबसे आला तेरी सान ॥ पेदा की पे है सव सान ॥ क्वा २ मु फा अली फ
दुनवान लाये गोरे लाये काले ॥ १ ॥ साजी दवना कनी मसजद ह
मीड वना कनी ॥ मह मुद भावी दुवना कनी ॥ मह बुवतु नी कना क्वा
पर दे दाले ॥ २ ॥ दिल कस है वातेरी अपाय की सी की आल दे घना
जा पाये ॥ आसी क गहन पाकर जीरे जा पगारतु पर दा जरा दु गले
॥ ३ ॥ अकवर क्वाली पु मजदु न तेरी कु दारत है व बुन ॥ देस मे मीला
काफर औ वर नुन दो नो जा हावी मक दाली ॥ ४ ॥ दगार
काजर औ वर नुन दो न

सहती



राग गजल ॥ ५१ ॥ भुले प्रसिद्धाजी महाराज सारे श्रीषी बननेवाले

॥ ५१ ॥ कीन्ही कारी आरे. घपारा युक्त सै रचास कल सैलार ॥ १ ॥ ती

सपर नीम को पानी चार. युक्त गणेश तुर क हनेवाले ॥ १ ॥ चौद्व

को सार तेई कसार. सच सुठ सतुर गंवा ॥ १ ॥ के सो पक्ष चाने

नार. बेची हो के देखे नाले ॥ २ ॥ अद्य नुरे और वेई मान. लीप

दुई द्वी जीत समान ॥ २ ॥ इनकी कोर न कुक्ष पक्ष चान. कमापीने

गन्धे प्रभु वाली ॥ ३ ॥ बोई के सी सींग जमान. सुठ को दुम

का बनाते ॥ ३ ॥ लीप के दिग्गह सो लगाने. परी रते गी रते च

वाने ॥ ४ ॥ दस बी बीर चते सै सार. दो का जरा न होता पार

॥ ४ ॥ हने सु सै सवनार. अफना धर न कर म सम जाले ॥ ५ ॥

पक्ष मुष को ह को न ह वाल. चार मुख वालों के घड़ी हाल ॥

आप ह कमा के ह सै बी लाल. अनुरान के नीर नीराले

भुले ॥ ६ ॥ स्वस्ती श्री सर्व प बा हो जे लाई सकत

उरा जू री घरा जू गार सा बर

रागदासरा ॥ ॐ ॥ जरा कही योसा मली योस आया करे ॥

आया करे मत जाया करे ॥ ॐ ॥ दिल नही ने नरे नही

नी दिधा सपने सँ दल न दिधा पा करे ॥ १ ॥ पहीर के नार

मेध जान लवु पे उाई अह इस सोने ती सपाहू ल कलाई

बलाई ॥ २ ॥ अपने वीगने द्या दुकी जाहा मेह सवाई ॥ ३ ॥

लल गने की हा अप सोस जो पपाई ॥ ३ ॥

रागठर ॥ ॐ ॥ दिल ना पान के क्षम सेग जा जो पगे ॥ ॐ ॥

ही जत मे श्री न के जान चली है न जो मही ले सोत मु ल वा

ये जा पगे ॥ १ ॥ सपन पदे से ज्यादा है तेरा दिल का तील

॥ २ ॥ आसान न जा वाल को मु ल की ल का तील डिपरे वे दार दली

तमू ये स व जाही ल का तील न की पाजी ब द ग पा हो के वी

समल की तील ॥ ३ ॥ ये न पे जम मू प का की य का तील का

लील को ल को दरे जी गरि के म च के दि प्राये जाये ॥ ३ ॥

राग इन्दु सो भा दशा ॥ ११ ॥ धने पर सब से अकर राजा

इन्दु आती है ॥ ११ ॥ जा मे वजा ता ले वजा आ मे भा फी ले

हाती है ॥ ११ ॥ जागी जगी जगी और स्यासी ॥ सबे ले दाही नी

हाती है ॥ ११ ॥

राग इन्दु सो भा दशा ॥ ११ ॥ अक नावना मे प्रे जो की मे

स आ ॥ ११ ॥ दर बार सारा दो एक दे सवी दस मु लु ॥ जव ले मे

रु री गो गी हवा क पर री गा जाता ॥ ११ ॥

सा दशा ॥ ११ ॥ गु ल स चो द श द न ॥ ११ ॥

धना स दशा ॥ ११ ॥

११४

१२१५०

१२१५०

१५०

१२५

२५१७५

३

१२१५०

१२१५०

१५०

१२५

२५१७५

३१

२५१७५

३१

२५१७५

३४

१०७६०

२५१७५

१२१५०

२५१२५

१२९१५०

३५

२५१५०

राजस्वाम प्रताप ॥ ॥ धुमि २ खास लादि मा
हा देव स्वामि ॥ हु तिगेल वसहा तु तिगेल दोर
॥ सिव के चरि ॥ दे वि वा कुल जोर धुमि ॥ १ ॥
भरि स्व ज कुल जोर दे हर उ ह पि ॥ अचने र
हर सिव वाग ला वि ह पि धुमि २ ॥ २ ॥ ल ल पु र
ल जोर दे हर प था पि ॥ अचने र हर सिव वि भु ति
व ला ई धुमि २ ॥ ३ ॥ धि र क र पु जोर दे हर प था
पि ॥ अचने र हर सिव भाग च पा ई धुमि २ ॥ ४ ॥ भ
१२ व र्ण पा न जोर दे हर प था ई ॥ अचने र हर सि
व : लु लु च पा ई धुमि २ ॥ ५ ॥ भ न य म द्या प
ति लु दे व मां वा ति ॥ व र्ण सि व पि व ति भु
व न य ति धुमि ॥ ६ ॥ मी न द म जो वी क

राजस्वाम प्रताप ॥ ॥ धुमि २ खास
भी ग रो शे

राज
पम
नाठ
सो
नका
दको
क पा

राम लीला ॥ ॥ खाल जाह कु नुगल को नु मन का
 पग कु कल नुपा मन का पग कु ॥ सो गुली भुवन पा
 नाठ नु पावस देव देव को सा का पे धाम का ॥ नद न
 सो सापा देस वनो दको लीला के ली कल नुपा म
 न का पे व ॥ १ ॥ पासा दको मुना सा रु ली वना सा
 दको तना सा च म नु पा ॥ वरु पा खा ना सा नी त
 का पा दधी दधि नु ते पा कु स द क नु म र ॥ २ ॥

जय गणेश जन नाथ दया नील

श्री सीताराम

सीताराम सीता राम सीताराम सीता
 सीताराम सीताराम

रामराम

आज बीसा पानी गधी का हो काम का
 रीन्दो के यवो चीत उप्रान्त आरना
 काम बीसपते

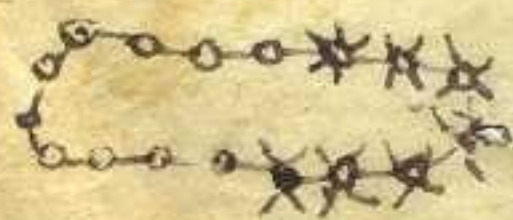
[illegible][illegible]

५
न न
प प
क क
व व
म म
ठ ठ
अ अ
र र
ग ग
श श
स स
~~ख ख~~
इ इ
ह ह
य य
र र
डा डा
ता ता
—
—

[illegible]

हे भगिरेहो आकासमे नो वादत नाहि काहे पो वरसल पाति को हुंकार
गीरल आसु काहे मन मुहु नाई हे पितै हो दु बि रमै ना पु कल राजा प
किनि मारि पोषा सोहि का र रागीरु आसु सोहि मनो मुहु नाई
हे भगिरेहो कौ न जु मनि से वा बल जे नीरु धे के वातु धातु सोहि जति
हुहु मरुं पार द किनि भवनहि पारि हे पित गहो उ तराहु तं से ल हरि पो
षाि फरु कि कोष वागीरु स यद तं पाल राजा ला हा का भौरा न सय
मा पाई हे पित गहो नो रहल प्यो दु वा कपि धरम को भागि पो
षाई वायु वेग स माव ह द किनि तु स हाम से ग बलि जात
हे पित गहो तात परग बला ईर जा प्यो न वा पुहु ल छानि
माई सोहि जगति सोत स राजा द किनि वारि रज
हे वर जाई हो का हा ग यो मे रि महु मा राते का
परग बलाई के मारि दिहु गे हा म को वात बलात
को जोति जग मग भय हो हा मि तर लो वे मुर का बाई महु मा राते का
हा ग यो हा म को सुधान पाई हे पर देसि हो जै स नारे न हा तुगी
तुमने कै से नारे हा तुगी जै से कहल औ से ह म रष दिगी हा म को वा
तवताह हे मु दारि हो रष दिजे रौ के नारे सोहि ना त मे हा तुगी औ
से ना से हा म न हि जा तुगी रष दिजे हो रौ के नारे हे पर देसि हो
को न दि सा ना आ य हो तु म को न दे स मे जाई कानु मा रो

जानहि वीसि कोने कारन आई ॥ हे राजा हो दखी न पिता
सो आई हो राजा उतर दि सारी जाई जात कमो राजा ॥ ६३ ॥
मुलु क फिर आई ॥ ते सधि रहो आज कि रात मे सपना देखि
मन न पलठ फल काहा यम दु मा लति कै स प्रनर पाई ॥
ह पिता को फाँटे कु विरह लजाई कोने दुष म मोह कोने कारन मो
कल जाई ता कु वी न वताई ॥ ते जल विंद हो य सह वोलि को न रहल
ताम के जानि ॥ ६४ ॥ य सह वोलि मा को न रहे को ताम कु न न दे पा
॥ ६५ ॥ हे राजा हो भव कुं दल पतु बल राज मा फेंक जालि ॥ आई राज
न कर ले गन सुजे की दल मे दु ॥ हे राजा हो भव कुं दल पतु
क ॥ ६६ ॥ गलि ॥ आई राजा जन क ले हो राजा र की
॥ ६७ ॥ राजा हो एक की दल पतु बल राजा मे रा देह ग
लि ॥ ६८ ॥ राजा जन करे हे राजा सपना की दल मे दु ॥
हे राजा हो सपना की दल पतु बल राजा मे रा देह गलि ॥
आई राजा जन करे हे राजा सपना की दल मे दु ॥



ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ॥ ਸਤਿਨਾਮੁ ਕਰਤਾ ਹਰਿ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

Handwritten text in Devanagari script, likely a signature or date, with some blue ink markings.

... ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ...

135

124

129

भारत - १४५
१२४

मध्य - 120
मध्य - 140

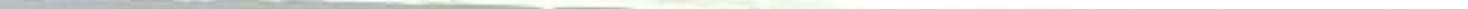
तहकाली - १९२

125
313.8

आमल - १। वकीले.

संता १९१९-१९
४५०

3182



श्री

स्वस्ती श्री सर्वपिता गोपेसा श्री सखल गुहा गरी प सदा सुत
आराधाम स्वस्ती



राग ॥ ॥ नमस्तु हाती न जये जये न वन
 गरुडः ॥ ॥ की गल सङ्ग या वः जु न न बुल
 टे ॥ ॥ लिय मोल दुस्ये दुस्ये दुस्ये नः ॥ १ ॥
 पा लई जो ना जु याः मनि जं प मालाः ॥ हट या काये
 बालः ली व या काये बालः स्ये बा या ये मालः २ ॥ २ ॥
 श्री जोग न री न री जोग न री न री जोग न री न री
 ॥ ॥ उजन मरु वरु २ सो व वी वरु नः राधा ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 राग ॥ ॥ ॥ रीं श्री सी सी साठ हाट गु मा ए वी घन
 वी ना ये क प्र सु हारे ॥ ॥ ॥ ॥ मुड मा ना ज प मालाः हे माई
 रुके ॥ ॥ भव ला गर मे मु नी रहे ॥ १ ॥ का
 सहा ये ॥ ॥ मु नी देव को बाल करो ॥ २ ॥

राजा यथातीका द्वारा यहुका वंश सा बस्ये
 व नामक यादव भीये इनको राजा उग्रसेनकी
 पुत्री देवकी संग वीवाह भयो वीवाहका अन्तर देवकी
 हाइ घर जहा उहा कंस ओकर सारखी बनेर जानहा जे
 को भीयो यही भोका सा उहने मुखि ओही हे नसहाइ
 पुत्रा उन जान हाउपको दस डेसको आठौ जन्म
 लहाइ मानिध भने आकाश वासी सुन्यो

सगवत वरुन साज आसुन गंतु हं।
 गापु। पुन को। पुन को। पुन को। पुन को। पुन को।
 नमसीलुं

मीमीलुं

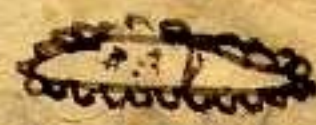


मीमीलुं गंतु
 पुन को। पुन को।
 वा। ही न १। १।
 वक रमु व १२।
 री लू क १३।
 वापु को १४।
 गा। लू क १५।

प्यामिच/मगारु

सल्लोकीसनेपिना। गपु। गपु। गपु। गपु। गपु।





Handwritten text in Devanagari script, possibly a title or invocation.

श्रीगणेशाय नमः श्रीवामदेवकाय श्रीमहादेवाय नमः
सरस्वतीमाताकाय नमः



Handwritten text in Devanagari script.



श्रीगणेशाय नमः



INTSTP THIN

INTSTP THIN



Pushed down

BEHUNE IN HIS OFFENSIVE OF APRIL 1911

RE THE ENEMY WAS HELD FROM

